प्रश्न- सामाजिक मनोविज्ञान की परम्पराओं या उसके इतिहास की व्याख्या करें। (Explain the traditions of the history of Social Psychology) :→

Ans:- यह कहना बहुत कठिन है कि समाज मनोविज्ञान का आरम्भ ठीक ठीक कब हुआ क्योंकि सामाजिक व्यवहार के संबंध में प्राचीन काल से ही अटकलबाजी होती रही है। ऑलपोर्ट के इस कथन से स्पष्ट है कि समाज-मनोविज्ञान का पूर्ण सर्वेक्षण करना व्यावहारिक रूप से असम्भव नहीं है किन्तु आवश्यक है। इसलिए हम यहाँ समाज मनोविज्ञान की दार्शनिक पृष्ठभूमि का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए स्वतंत्र विज्ञान के रूप में इसके आविर्भाव बीसवीं शताब्दी में इसके विकास तथा इसकी वर्तमान स्थिति तथा विचार धारा पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

(1) दार्शनिक पृष्ठभूमि (Philosophical Background) :→

समाज मनोविज्ञान के ऐतिहासिक विकास में दार्शनिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राचीन काल से मानव अवस्था को दर्शन के कार्य क्षेत्र के अंतर्गत समझा जाता रहा है। जिस तरह आज समाज-मनोवैज्ञानिक एक व्यक्ति पर दूसरे लोगों के प्रभाव को स्वीकार करते हैं, उसी प्रकार दार्शनिकों ने इस बात पर स्वीकार किया है कि वैयक्तिक व्यवहार पर दूसरे लोगों का निश्चित प्रभाव पड़ता है। उदाहरणस्वरूप प्लेटो ने भीड़ मन की कल्पना की और कहा कि बुद्धिमान व्यक्ति भी भीड़ की परिस्थिति से प्रभावित होकर अविवेक एवं असंगत व्यवहार करने लगते हैं।

स्थापना 1908 से 1924 के बीच हुई। विलियम मैक्डूगल ने 1908 में समाज मनोविज्ञान पर अपनी पाठ्य पुस्तक को प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने बतलाया है सामाजिक व्यवहार की उत्पत्ति मूल प्रवृत्तियों से होती है। इस आधार पर मैक्डूगल को समाज मनोविज्ञान का जनक माना गया। लेकिन मैक्डूगल द्वारा मूल प्रवृत्तियों पर ~~आधारित~~ आधारित सामाजिक व्यवहार की व्याख्या को वर्तमान समय में लगभग सभी समाज मनोवैज्ञानिकों ने अस्वीकार कर दिया। इस कारण उन्हें समाज मनोविज्ञान का जनक कहना भी संदिग्ध हो गया।

1924 में समाज मनोविज्ञान पर आलपोर्ट की पाठ्यपुस्तक प्रकाशित हुई, जिसमें सामाजिक व्यवहार की व्याख्या मूल प्रवृत्तियों से भिन्न अनेक कारकों यथा दूसरों की उपस्थिति तथा उनके विशिष्ट व्यवहार, दूसरों की संवेगों की पहचान, सामाजिक अनुपालन आदि के आलोक में की गई। आलपोर्ट के विचार से आधुनिक मनोवैज्ञानिक सहमत हैं। इस अर्थ में समाज मनोविज्ञान की विधिवत स्थापना का वर्ष 1924 और आलपोर्ट को इसका जनक माना जा सकता है।

(3) <u>विकास-युग</u> (<u>Growth Period</u>):- आलपोर्ट की पाठ्य पुस्तक के प्रकाशन के पश्चात समाज मनोविज्ञान का विकास तेजी से होने लगा। नई-नई समस्याओं का अध्ययन होने लगा और उनके अनुसंधान हेतु प्रमाणबद्ध विधियों का विकास तेज हो गया। 1930 से 1940 की अवधि में द्वितीय विश्व युद्ध का

इनके अतिरिक्त अरस्तु, हाब्स, लाक, ह्यूम विलियम ने भी दार्शनिक पृष्ठभूमि में समाज मनोविज्ञान के विकास में योगदान किया।

कॉम्टे नामक फ्रांसीसी दार्शनिक तथा समाजशास्त्री ने प्रत्यक्षवाद के माध्यम से मानव व्यवहार के सामाजिक पहलुओं पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर बल दिया है व्यक्ति की सही पहचान उसकी सामाजिकता के संदर्भ में ही संभव है। उन्होंने वैयक्तिक मनोविज्ञान के बदले सामाजिक विज्ञान की कल्पना की और अन्तर्निरीक्षण की ~~वै~~ वैधता को चुनौती दी। इनसे एक ओर समाज विज्ञान तथा दूसरी ओर मनोविज्ञान के विकास में मदद मिली। इस कारण ~~कॉम्टे~~ कॉम्टे को समाज विज्ञान का जनक कहा जाता है।

(2) <u>सामाजिक मनोविज्ञान का आविर्भाव</u> :→ रॉस तथा विन्सेन्ट ने 1894 में प्रथम समाजशास्त्रीय पाठ्य पुस्तक प्रकाशित की जिसके पाँच अध्याय समाज मनोविज्ञान को समर्पित किया। रॉस नामक समाजशास्त्री ने 1908 में समाज मनोविज्ञान नामक पुस्तक को प्रकाशित किया। फ्रेंच समाजशास्त्री कौम्टे ने एक सक्षम अधिकारी के रूप में समाज मनोविज्ञान को पैतृत्व प्रदान किया। फिर भी अब तक समाज मनोविज्ञान के आविर्भाव की आधिकारिक तिथि निर्धारित नहीं हो पाई।

~~@~~ कसीन तथा विर्नी के अनुसार एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में समाज मनोविज्ञान की

गहरा प्रभाव समाज मनोविज्ञान के विकास पर पड़ा।
इस अवधि में कई यूरोपीय सामाजिक, मनोवैज्ञानिक,
भाग कर अमेरिका आये जहां उन्होंने समाज
मनोविज्ञान की रूप रेखा पर गहरा प्रभाव डाला।
इसी संदर्भ में विशेष रूप से मुजफ्फर शेरिफ
तथा कर्ट लेविन ने सामाजिक मानकों का अध्ययन
शुरू किया उन्होंने सामाजिक मानकों को सामाजिक
व्यवहार का निर्धारक माना। लेविन ने अपने
सहकर्मियों के साथ मिलकर नेतृत्व तथा समूह
समूह प्रक्रियाओं का अध्ययन आरंभ किया और
सामाजिक समस्याओं के अध्ययन में वैज्ञानिक
विधियों के उपयोग पर बल दिया। मुजफ्फर शेरिफ
के स्वचालित प्रयोगों से पता चला कि सामाजिक
समूह का प्रभाव भौतिक वास्तविकता के
प्रत्यक्षीकरण एवं व्याख्या पर भी पड़ सकता है।
इस प्रकार 1930 के अंतिम दशक तक समाज
मनोविज्ञान एक सक्रिय एवं प्रभावशाली विज्ञान के
रूप में विकसित हो गया।